'कामायनी'

[महाकाव्यत्व, रूपकत्व, प्रतीकात्मकता]

B.A. II

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्नपत्र

* प्रस्तुतकर्ता *

डॉ. जगदीश शरण

सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय, भोजपुर

(मुरादाबाद)

वैश्विक

: स्वयंनिर्मित :

Scanned with CamScanner

प्रसाद : संक्षिप्त परिचय : पूरा नाम – जयशंकर प्रसाद। प्रसिद्ध छायावादी कवि। छायावाद के चार स्तम्भों में से एक। काशी के प्रतिष्ठित 'सुँघनी साहु' के नाम से प्रसिद्ध व्यापारी परिवार के घर सन् 1889 ईस्वी में जन्म। प्रारम्भ में 'कलाधर' के नाम से काव्य-सृजन। प्रसिद्ध काव्यकृतियाँ – कानन कुसुम, प्रेम पथिक, कामायनी, आँसू, झरना, लहर आदि। 'कामायनी' इनकी प्रसिद्ध रचना। मृत्यु सन् 1937 ईस्वी में काशी में।

कामायनी : 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित छायावाद की अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ रचना है। यह सन् 1935 में लिखी गई। प्राचीन जलप्लावन के उपरान्त मनु द्वारा मानवी सृष्टि के पुनर्विधान का आलम्बन लेकर इस प्रबन्धकाव्य की रचना हुई है। इस महाकाव्य में चिन्ता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य और आनन्द नामक पन्द्रह सर्ग हैं। 'कामायनी' के प्रमुख पात्र श्रद्धा, इड़ा और मनु तथा गौण पात्र आकुलि और ~~किला~~ किलात तथा मनु-पुत्र मानव हैं।

~~महाकाव्यत्व~~ : महाकाव्यत्व : जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' छायावाद के अन्तिम चरण की सर्वाधिक प्रसिद्ध और सर्वश्रेष्ठ कृति है। प्रसाद ने लगभग बारह साल की कठोर तपस्या करके इस कृति का निर्माण किया था। छायावादी शैली मुख्यतः मुक्तक शैली मानी जाती है किन्तु 'कामायनी' की रचना कर प्रसाद ने यह सिद्ध कर दिया कि छायावादी शैली में भी अत्यन्त उच्चकोटि के सफल प्रबन्धकाव्य का भी प्रणयन किया जा सकता है।

'कामायनी' में एक सफल महाकाव्य के सभी गुण मौजूद हैं। लोकप्रसिद्ध प्राचीन जल-प्रलय की घटना के उपरान्त मनु द्वारा मानवी सृष्टि के पुनर्विधान का आलम्बन लेकर 'कामायनी' की रचना हुई है। इसमें कुल पन्द्रह सर्ग हैं। प्रत्येक सर्ग के अन्त में अगले सर्ग की कथा का आभास होता है। 'कामायनी' का नायक मनु लोक-विश्रुत और धर्मपरायण महापुरुष है। इसकी कथा निरन्तर विकसित होती रही है। इसका प्रमुख रस श्रृंगार है और अन्य रस गौण रूप में आये हैं। कवि ने 'कामायनी' के माध्यम से ज्ञान, क्रिया और इच्छा में समन्वय स्थापित करने का उपदेश दिया है। उसका यह दर्शन है कि जब तक इन तीनों में समन्वय नहीं होगा तब तक मानव जीवन

Scanned with CamScanner

दुःख ही भोगता रहेगा। विश्व में आनन्दवाद की स्थापना करना 'कामायनी' का उद्देश्य है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, प्रसाद जी प्रबन्ध क्षेत्र में भी छायावाद की प्रधान और लाक्षणिक शैली की सफलता की आशा बँधा गए हैं।

रूपकत्व : भारतीय साहित्यशास्त्र में दृश्य-काव्य को रूपक माना जाता है और रूपक एक अलंकार भी होता है जिसमें अप्रस्तुत का प्रस्तुत पर अभेदपरक आरोप किया जाता है। रूपक के लिए अन्योक्ति शब्द का भी प्रयोग किया जाता है जिसका अभिप्राय यह है कि प्रस्तुत अर्थ के साथ ही एक अप्रस्तुत अर्थ भी ध्वनित होता रहे। इसी कारण जायसी कृत 'पद्मावत' के लिए रूपक के स्थान पर अन्योक्ति का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार रूपक अलंकार और अन्योक्ति का मिश्रित रूप ही रूपक कहा जा सकता है।

'कामायनी' के 'आमुख' में जयशंकर प्रसाद स्वयं स्वीकार करते हैं कि "यदि श्रद्धा और मनु अर्थात् मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है तो भी बड़ा भावमय और श्लाघ्य है, यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है।"

'कामायनी' में मुख्य पात्र तीन हैं — श्रद्धा, मनु और इड़ा। मनु-पुत्र कुमार, असुर पुरोहित किलात और आकुलि गौण पात्र हैं। काम और लज्जा नामक दो अशरीरी पात्र हैं। इनके अतिरिक्त जलप्लावन, त्रिलोक और मानसरोवर भी प्रतीक रूप में वर्णित किए गए हैं।

जयशंकर प्रसाद के अनुसार श्रद्धा हृदय-पक्ष की और इड़ा बुद्धि-पक्ष की प्रतीक है। मनु मन या मनन के प्रतीक हैं। किलात और आकुलि आसुरी वृत्तियों के प्रतीक हैं। अहं और उच्छृंखलता से मनु के चरित्र का निर्माण हुआ है। श्रद्धा और इड़ा दोनों पर ही वे अपना प्रभाव और पूर्ण अधिकार चाहते हैं जिसके कारण उन्हें दुःख भोगना पड़ता है। बाद में उन्हें ज्ञान होता है कि भाव, कर्म और ज्ञानवृत्ति में परस्पर सामंजस्य के अभाव में मानव-जीवन विडम्बनापूर्ण बन जाता है। अन्ततः श्रद्धा द्वारा तीनों में सामंजस्य स्थापित हो जाने पर वे आनन्द का अनुभव करते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रतीकात्मकता : 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद का श्रेष्ठ प्रतीकात्मक काव्य है। काव्य-साहित्य में प्रतीक एक प्रकार का अलंकार है। प्रतीक का सामान्य अर्थ है- संकेत, चिन्ह, जिसका प्रयोग किसी अन्य अर्थ के स्थान पर किया जाता है। दूसरे शब्दों में, जब कोई पदार्थ किसी भाव या विचार का संकेत बन जाता है तो प्रतीक कहलाता है, जैसे- कबीर की रचनाओं में 'हंस' जीवात्मा का प्रतीक बनकर आया है। प्रतीक-योजना का उद्देश्य साहित्य में प्रमुखतः कथ्य को आकर्षक रूप प्रदान करना होता है। इसके दो पक्ष होते हैं- प्रस्तुत और अप्रस्तुत। इनमें से प्रथम का सम्बन्ध तथ्य या विचार से और दूसरे का सम्बन्ध भाव एवं अनुभूति से रहता है।

'कामायनी' में सभी पात्र प्रतीक-रूप में प्रस्तुत हुए हैं। इसके मुख्य पात्र तीन हैं- श्रद्धा, मनु और इड़ा। मनु-पुत्र कुमार, असुर पुरोहित किलात और आकुलि गौण पात्र हैं। काम और लज्जा नामक दो अशरीरी पात्र हैं। इनके अतिरिक्त जलप्लावन, त्रिलोक और मानसरोवर भी प्रतीक रूप में वर्णित किए गए हैं।

'कामायनी' में मनु मन के प्रतीक हैं और मन अगणित चिन्ताओं, वासनाओं और इच्छाओं का घर होता जिसका कारण मानव द्वारा वांछित वस्तु का अभाव होता है। यह अभाव ही मानव-मन में अशान्ति उत्पन्न करता है। इस अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए मानव-हृदय में आशा का उदय होता है जिससे श्रद्धा का आविर्भाव होता है।

'कामायनी' का दूसरा प्रमुख पात्र श्रद्धा है जो सेवा, त्याग, ममता, करुणा, दया, क्षमा आदि नारी विषयक उदात्त वृत्तियों का प्रतीक है। आनन्दमय अवस्था की प्राप्ति श्रद्धा के बिना सम्भव नहीं है। 'प्रसाद' ने श्रद्धा को हृदय का प्रतीक मानते हुए कहा है :

> हृदय की अनुकृति बाह्य उदार,
> एक लम्बी काया उन्मुक्त। -

Scanned with CamScanner

श्रद्धा मनु (मन) के भीतर की उगी द्वेष-भावना, काम-वासना आदि को दमित कर उन्हें शान्ति की ओर उन्मुख करती है।

'कामायनी' का तीसरा प्रमुख पात्र इड़ा है जो बुद्धिपक्ष का प्रतीक है। यह मन को नाना प्रकार के कर्मजालों में फँसाकर वैषम्य, संघर्ष और अशान्ति को जन्म देती है। बुद्धिवाद के भँवर में फँसकर मानव की जो दुर्दशा होती है, उसे कामायनीकार ने मनु की अस्थिर स्थिति का चित्रण कर दिखाया है।

अन्य पात्रों में मनु-पुत्र कुमार मानव का प्रतीक है। असुर पुरोहित किलात और आकुलि आसुरी प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। श्रद्धा मनु को सन्मार्ग पर ले जाना चाहती है, किन्तु किलात और आकुलि उसे पशुबलि के लिए प्रोत्साहित करते हैं। तदन्तर मनु कार्य में लीन होते हैं और पशुयज्ञ करते हैं। श्रद्धा इस कर्म के प्रति अपनी उदासीनता दिखाती है।

अन्य प्रतीकों, यथा – काम, लज्जा, जलप्लावन, त्रिलोक और मानसरोवर का मूल्यांकन की दृष्टि से इतना अधिक महत्व नहीं है।